فَسَیَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِیْۤ

तो अब जान जाएंगे कि किस का मददगार कमज़ोर किस की गिनती कम[46] तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता

اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا

आया नज़्दीक है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा[47] ग़ैब का जानने वाला तो

یُظْهِرُ عَلٰى غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ یَسْلُكُ

अपने ग़ैब पर[48] किसी को मुसल्लत़ नहीं करता[49] सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के[50] कि उन के

مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿۲۷﴾ لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا

आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है[51] ताकि देख ले कि उन्हों ने अपने रब के

رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَیْهِمْ وَ اَحْصٰى كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾ ع ۲/۱۲

पयाम पहुंचा दिये और जो कुछ उन के पास सब उस के इ़ल्म में है और उस ने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है[52]

اٰیاتها ۲۰ | (۷۳) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّیَّةٌ (۳) | ركوعاتها ۲

सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में बीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿۱﴾ قُمِ الَّیْلَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ

ऐ झुरमट मारने वाले[2] रात में क़ियाम फ़रमा[3] सिवा कुछ रात के[4] आधी रात या इस से कुछ

46 : काफ़िर की या मोमिन की या'नी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मोमिन की मदद अल्लाह तआ़ला और उस के अम्बिया और मलाएका सब फ़रमाएंगे। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था कि येह वा'दा कब पूरा होगा ? उस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई **47 :** या'नी वक़्ते अ़ज़ाब का इ़ल्म ग़ैब है जिसे अल्लाह तआ़ला ही जाने **48 :** या'नी अपने ग़ैबे ख़ास पर जिस के साथ वोह मुन्फ़रिद है। (خازن و بیضاوی وغیرہ) **49 :** या'नी इत्तिलाए कामिल नहीं देता जिस से ह़क़ाइक़ का कश्फ़े ताम आ'ला दरजए यक़ीन के साथ ह़ासिल हो **50 :** तो उन्हें ग़ुयूब पर मुसल्लत़ करता है और इत्तिलाए कामिल और कश्फ़े ताम अ़ता फ़रमाता है और येह इ़ल्मे ग़ैब उन के लिये मो'जिज़ा होता है, औलिया को भी अगर्चे ग़ुयूब पर इत्तिलाअ़ दी जाती है मगर अम्बिया का इ़ल्म ब ए'तिबारे कश्फ़ व इन्जिला औलिया के इ़ल्म से बहुत बुलन्दो बाला व अर्फ़ओ आ'ला है और औलिया के उ़लूम अम्बिया ही के वसात़त और उन्ही के फ़ैज़ से होते हैं। मो'तज़िला एक गुमराह फ़िर्क़ा है, वोह औलिया के लिये इ़ल्मे ग़ैब का क़ाइल नहीं, उस का ख़याल बात़िल और अह़ादीसे कसीरा के ख़िलाफ़ है और इस आयत से उन का तमस्सुक (दलील पकड़ना) सह़ीह़ नहीं, बयाने मज़्कूरा बाला में इस का इशारा कर दिया गया है। सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुर्तज़ा रसूलों में सब से आ'ला हैं अल्लाह तआ़ला ने आप को तमाम अश्या के उ़लूम अ़ता फ़रमाए जैसा कि सिह़ाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और येह आयत ह़ुज़ूर के और तमाम मुर्तज़ा रसूलों के लिये ग़ैब का इ़ल्म साबित करती है। **51 :** फ़िरिश्तों को जो उन की ह़िफ़ाज़त करते हैं **52 :** इस से साबित हुवा कि जमीअ़ अश्या मह़दूद व मह़सूर व मुतनाही हैं। **1 :** सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बीस 20 आयतें, दो सो पचासी 285 कलिमे, आठ सो अड़तीस 838 ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी

www.dawateislami.net

قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ

कम करो या इस पर कुछ बढ़ाओ[5] और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो[6] बेशक अ़न्क़रीब हम तुम पर एक

قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾ اِنَّ

भारी बात डालेंगे[7] बेशक रात का उठना[8] वोह ज़ियादा दबाव डालता है[9] और बात ख़ूब सीधी निकलती है[10] बेशक

لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ

दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं[11] और अपने रब का नाम याद करो[12] और सब से टूट कर

تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾

उसी के हो रहो[13] वोह पूरब का रब और पश्चिम का रब उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ[14]

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِيْ وَ

और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी त़रह़ छोड़ दो[15] और मुझ पर छोड़ो

الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾

उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो[16] बेशक हमारे पास[17] भारी बेड़ियां हैं और भड़क्ती आग

अपने कपड़ों से लिपटने वाले, इस के **शाने नुज़ूल** में कई क़ौल हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्तिदाए ज़मानए वह्य में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे ऐसी ह़ालत में आप को ह़ज़रते जिब्रील ने "يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ" कह कर निदा की। एक क़ौल येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस ह़ालत में आप को निदा की गई "يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ" बहर ह़ाल येह निदा बताती है कि मह़बूब की हर अदा प्यारी है और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह हैं कि रिदाए नुबुव्वत व चादरे रिसालत के ह़ामिल व लाइक़। **3 :** नमाज़ और इ़बादत के साथ **4 :** या'नी थोड़ा हिस्सा आराम के लिये हो बाक़ी शब इ़बादत में गुज़ारिये, अब वोह बाक़ी कितनी हो उस की तफ़्सील आगे इर्शाद फ़रमाई जाती है **5 :** मुराद येह है कि आप को इख़्तियार दिया गया है कि ख़्वाह क़ियाम निस्फ़ शब से कम हो या निस्फ़ शब या इस से ज़ियादा हो। (بیضاوی) मुराद इस क़ियाम से तहज्जुद है जो इब्तिदाए इस्लाम में वाजिब व बक़ौले फ़र्ज़ था, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब शब को क़ियाम फ़रमाते और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वोह तमाम शब क़ियाम में रहते और सुब्ह़ तक नमाज़ें पढ़ते, इस अन्देशे से कि क़ियाम क़दरे वाजिब से कम न हो जाए, यहां तक कि उन ह़ज़रात के पाउं सूज जाते थे, फिर येह हुक्म एक साल के बा'द मन्सूख़ हो गया और इस का नासिख़ भी इसी सूरत में है "فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ" **6 :** रिआ़यते वुक़ूफ़ और अदाए मख़ारिज के साथ और ह़ुरूफ़ को मख़ारिज के साथ ता ब इम्कान सह़ीह़ अदा करना नमाज़ में फ़र्ज़ है। **7 :** या'नी निहायत जलील व बा अ़ज़मत, मुराद इस से क़ुरआने मजीद है, येह भी कहा गया है कि मा'ना येह हैं कि हम आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाएंगे जिस में अवामिर नवाही और तकालीफ़े शाक़्क़ा हैं जो मुकल्लफ़ीन पर भारी होंगी। **8 :** सोने के बा'द **9 :** ब निस्बत दिन की नमाज़ के **10 :** क्यूं कि वोह वक़्त सुकून व इत़्मीनान का है शोरो शग़ब से अम्न होती है, इख़्लास ताम व कामिल होता है, रिया व नुमाइश का मौक़अ़ नहीं होता। **11 :** शब का वक़्त इ़बादत के लिये ख़ूब फ़राग़त का है **12 :** रात व दिन के जुम्ला अवक़ात में तस्बीह़, तह्लील, नमाज़, तिलावते क़ुरआन शरीफ़, दर्से इ़ल्म वग़ैरा के साथ और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह हैं कि अपनी क़िराअत की इब्तिदा में "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ो। **13 :** या'नी इ़बादत में इन्क़ित़ाअ़ की सिफ़त हो कि दिल **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और किसी की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो, सब अ़लाक़ा क़त़्अ़ (तअ़ल्लुक़ ख़त्म) हो जाएं, उसी की त़रफ़ तवज्जोह रहे। **14 :** और अपने काम उसी की त़रफ़ तफ़्वीज़ करो **15 :** "وَهٰذَا مَنْسُوْخٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (और येह हुक्म जिहाद की आयत से मन्सूख़ हो चुका है) **16 :** बद्र तक या रोज़े क़ियामत तक **17 :** आख़िरत में।

www.dawateislami.net

وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۳﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ

और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब[18] जिस दिन थरथराएंगे ज़मीन और पहाड़[19]

وَ كَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿۱۴﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا

और पहाड़ हो जाएंगे रेते का टीला बहता हुवा बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक रसूल भेजे[20] कि तुम पर

عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ

हाज़िर नाज़िर हैं[21] जैसे हम ने फ़िरऔ़न की त़रफ़ रसूल भेजे[22] तो फ़िरऔ़न ने उस रसूल का

الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿۱۶﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا

हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरिफ़्त से पकड़ा फिर कैसे बचोगे[23] अगर[24] कुफ़्र करो उस दिन से[25]

يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿۱۷﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿۱۸﴾

जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा[26] आस्मान उस के सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वा'दा हो कर रहना

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۱۹﴾ ع اِنَّ رَبَّكَ

बेशक येह नसीह़त है तो जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह ले[27] बेशक तुम्हारा रब

يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ وَ طَآىِٕفَةٌ مِّنَ

जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअ़त

الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَ اللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ

तुम्हारे साथ वाली[28] और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मा'लूम है कि ऐ मुसल्मानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा[29]

فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

तो उस ने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई अब क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो[30] उसे मा'लूम है कि अ़न्क़रीब कुछ तुम में

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ

बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश

18 : उन के लिये जिन्हों ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की 19 : वोह क़ियामत का दिन होगा। 20 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 21 : मोमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं 22 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام 23 : अ़ज़ाबे इलाही से 24 : दुन्या में 25 : या'नी क़ियामत के दिन जो निहायत होलनाक होगा 26 : अपने शिद्दते दह्शत से 27 : ईमान व त़ाअ़त इख़्तियार कर के 28 : तुम्हारे अस्ह़ाब की, वोह भी क़ियामे लैल में आप का इत्तिबाअ़ करते हैं। 29 : और ज़ब्ते अवक़ात न कर सकोगे 30 : या'नी शब का क़ियाम मुआ़फ़

اللهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ

करने[31] और कुछ **अल्लाह** की राह में लड़ते होंगे[32] तो जितना क़ुरआन मुयस्सर हो पढ़ो[33] और

اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا

नमाज़ क़ाइम रखो[34] और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दो[35] और

تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ

अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे

ع ٢٠ وَاسْتَغْفِرُوا اللهَ ۭ اِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع

और **अल्लाह** से बख़्शिश मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

اٰياتها ٥٦ | (٧٤) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ (٤) | ركوعاتها ٢

सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में छप्पन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ۙ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ۙ ﴿٤﴾

ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले[2] खड़े हो जाओ[3] फिर डर सुनाओ[4] और अपने रब ही की बड़ाई बोलो[5] और अपने कपड़े पाक रखो[6]

फ़रमाया। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़ में मुत्लक़ क़िराअत की फ़र्ज़िय्यत साबित हुई। **मस्अला :** अक़ल दरजए क़िराअते मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं। **31 :** या'नी तिजारत या तलबे इल्म के लिये **32 :** इन सब पर रात का क़ियाम दुश्वार होगा **33 :** इस से पहला हुक्म मन्सूख़ किया गया और येह भी पन्जगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया। **34 :** यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं। **35 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है सिलए रेहूमी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह़ माले ह़लाल से ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाए। **1 :** सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, छप्पन 56 आयतें, दो सो पचपन 255 कलिमे, एक हज़ार दस 1010 ह़र्फ़ हैं। **2 :** येह ख़िताब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को है। **शाने नुज़ूल :** हज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं कोहे हिरा पर था कि मुझे निदा की गई ''یَا مُحَمَّدُ اِنَّکَ رَسُوْلُ اللہِ'' मैं ने अपने दाएं बाएं देखा कुछ न पाया, ऊपर देखा एक शख़्स आस्मान ज़मीन के दरमियान बैठा है (या'नी वोही फ़िरिश्ता जिस ने निदा की थी) येह देख कर मुझ पर रो'ब हुवा और मैं ख़दीजा के पास आया और मैं ने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ, उन्हों ने उढ़ा दिया तो जिब्रील आए और उन्हों ने कहा : ''یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ'' **3 :** अपनी ख़्वाब गाह से **4 :** क़ौम को अ़ज़ाबे इलाही का ईमान न लाने पर **5 :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अल्लाहु अक्बर फ़रमाया, हज़रते ख़दीजा ने भी हुज़ूर की तक्बीर सुन कर तक्बीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि वह्य आई। **6 :** हर तरह़ की नजासत से क्यूं कि नमाज़ के लिये तहारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और ह़ालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या येह मा'ना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अ़रबों की आ़दत है क्यूं कि बहुत ज़ियादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एहतिमाल रहता है।